उत्तर- जैसा डॉ० श्यामसुन्दर दास का कहना है- "वल्लभाचार्य के शिष्यों में सर्वप्रथम, सूरसागर के रचयिता हिन्दी के अमर कवि महात्मा सूरदास हुए जिनकी सरस वाणी से देश के असंख्य सूखे हृदय हरे हो उठे और भग्नाशा जनता को जीने का नवीन उत्साह मिला।" वस्तुतः सूरदास जी भक्तिकाल की कृष्ण-भक्ति-शाखा के जाज्वल्यमान रत्न हैं और डॉ० ब्रजेश्वर शर्मा के शब्दों में "व्यावहारिक और सरस आदर्श की दृष्टि से सूर का काव्य अत्यन्त श्रेष्ठ है। वे एक ऐसे कवि हैं, जिनमें कवित्व, भक्ति भाव और जीवन-व्यापार सभी एक रस होकर घुल मिल गये हैं। हम उन्हें अपना सबसे सच्चा और सबसे श्रेष्ठ कवि कह सकते हैं।"

जीवन-परिचय- बाह्य-साक्ष्य और अन्तः साक्ष्यों का आधार लेकर सूर की जीवन झाँकी इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है। चौरासी वैष्णवों की वार्ता के आधार पर सूर को सारस्वत ब्राह्मण माना जाता है और इनके पिता का नाम रामदास था और ये देहली के पास सीही ग्राम में उत्पन्न हुए थे। यों सीही के अतिरिक्त गोपाचल, मथुरा का काई ग्राम तथा रूनकता को भी इनका जन्म-स्थान कहा जाता है लेकिन अधिकांश विचारक सीही को ही उनका जन्म-स्थान मानते हैं।

उनकी जन्मतिथि विक्रम सं. 1535 वैशाख शुक्ल पंचमी कही जाती है, लेकिन कतिपय विद्वान उनका जन्म 1500 वि. सं. भी मानते हैं। कहा जाता है कि सूर तेरह वर्ष की आयु में ही घर से विरक्त होकर अपने गाँव से चार कोस दूर एक तालाब के तट पर पीपल के वृक्ष के नीचे रहने लगे और अठारह वर्ष तक वहीं रहे लेकिन बाद में वैराग्य-भंग होने के भय से वहाँ अधिक समय तक न रह सके।

यह भी कहा जाता है कि वह अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न न थे और न केवल जन्मान्ध थे अपितु उनके चक्षु नाम मात्र को भी न थे। कहते हैं, अठारह वर्ष की आयु में ही वह प्रसिद्ध हो चुके थे और वैभव-सम्पन्न भी हो गये थे। लेकिन अपना समस्त धन माता-पिता को सौंप आगरा और मथुरा के बीच गऊघाट में रहने लगे। निपुण गायक होने के कारण उनके अनेक सेवक हो गये तथा बहुत दिनों पश्चात उनका वल्लभाचार्य से साक्षात्कार हुआ।

कहा जाता है कि वल्लभाचार्य को इन्होंने पहले भक्ति सम्बन्धी कुछ पद सुनाये तथा उनमें इन पदों से वह प्रभावित तो अवश्य हुए लेकिन उन्हें उनकी यह दैन्य-भावना प्रसन्द नहीं आयी। तब उन्होंने इनसे कुछ भगवत-लीला सम्बन्धी पद सुनाने को कहा। इसके पश्चात वल्लभाचार्य ने उन्हें पुष्टि-मार्ग में दीक्षित किया श्रीकृष्ण लीला से परिचित कराया और अपने साथ गोवर्द्धन पर श्रीनाथजी के मन्दिर ले जाकर उन्हें 'कीर्तन का मण्डान' सौंपा। यहीं रहकर सूर ने कृष्ण की विविध लीला से सम्बन्धित सहस्राधिक पद रचे और गाये। कालान्तर में वल्लभाचार्य के पुत्र विटठलनाथ ने चार अपने पिता जी के और चार अपने प्रमुख शिष्यों को ले आठ प्रमुख कवियों का कीर्तन-मण्डल 'अष्टछाप' नाम से स्थापित किया तथा

Scanned with CamScanner

सूर को इनका सर्व-प्रधान बनाया। वस्तुतः सूर अष्टछाप के सूर्य हैं। कतिपय ऐसी जनश्रुतियां भी प्रचलित हैं कि तानसेन ने सूर की अकबर से भेंट कराई थी, पर इस सम्बन्ध में प्रामाणिक तथ्यों का अभाव है।

यद्यपि सूर के गौलोकवास के सम्बन्ध में विभिन्न तिथियाँ मानी जाती हैं, लेकिन जैसा डॉ० दीन दयाल गुप्त और डॉ० हरवंश लाल शर्मा ने उनका देहावसान वि. सं. 1610 लगभग माना है, वह उचित ही है। इस सम्बन्ध में एक कथा भी प्रचलित है कि अन्त समय निकट जान सूर पारसोली के चन्द्र सरोवर के निकट पहुंच श्रीनाथ जी की ध्वजा के सामने दण्डवत कर लेट गये और जैसे ही कीर्तन के समय विटठलनाथ जी को यह समाचार प्राप्त हुआ वे भी वहाँ पहुंचे। सूर उस समय कृष्ण लीला सम्बन्धी एक पद गाने लगे और इसी समय चतुर्भुजदास ने कहा कि अपने गुरू महाराज का यश वर्णन नहीं किया है। वास्तव में सूर भगवान के यश को ही गुरू-यश मानते थे लेकिन इतने पर भी उन्होंने कहा-

भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो।
श्री वल्लभ नख चन्द्र छटा बिनु सब जग मांझ अंधेरो।।
साधन और नहीं या कलि में जासोउ होत नेंबेसो।
सूर कहा कहि दुविध अंधेरो बिना मोल को चेरो।।

इसके पश्चात विटठलनथ जी ने उनसे पूंछा कि सूरदास जी की चित्त की वृत्ति कहाँ है? तब उन्होंने उत्तर दिया-

बलि बलि हौं कुमारि राधिका, नन्द सुवन जासों रुति मानी।
वे अति चतुर सिरोमनि प्रीति करी कैसे होत है हानी।।

उन्होंने उनसे फिर पूछा कि सूरदास जी नेत्र की वृत्ति कहाँ हैं, तब उन्होंने पुनः कहा-

खंजन नैन रूप रस माते।
अतिसै चारू चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते।
चलि-चलि निनट जात स्त्रवनन के उलटि-पुलटि ताटंक फदाते।
सूरदास अंजन गुन अटके नतरु अबहिं उड़ि जाते।।

इतना कहकर सूर ने अपने प्राण छोड़ दिये।

सूरदास की कृतियों के सम्बन्ध में विद्वानों में कुछ मतभेद नहीं है और काशी में नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट, इतिहास-ग्रन्थ एवं पुस्तकालयों में सुरक्षित ग्रन्थों की नामावली के अनुसार सूर से सम्बद्ध निम्नांकित पच्चीस ग्रन्थ कहे जाते हैं-

1. सूर सारावली, 2. साहित्य लहरी, 3. सूर सागर, 4. भागवत भाषा, 5.दशम स्कन्ध भाषा, 6. सूर सागर सार, 7. सूर नारायण, 8. मानलीला, 9. राधा रस-केलि कौतूहल, 10. गोवर्धन लीला, 11. दान लीला, 12. भंवर गीत, 13. नागलीला, 14. व्याहलो, 15. प्राणप्यारी, 16. दृष्टिकूट, 17. सूर-शतक, 18. सूर साठी, 19. सूर-पचीसी, 20. सेवा-फूल, 21. सूरदास, के विनय आदि के स्फुट पद, 22. हरिवंश टीका (संस्कृत), 23. एकादशी माहात्म्य, 24. नल-दमयन्ती, और 25. राम जन्म!

इनमें से कई तो ऐसी कृतियाँ हैं जो सूर सागर का अंश हैं तथा और कुछ ऐसी हैं जो टेक ही के कारण सूर कृत मानी जाती हैं तथा कुछ की प्रामाणिकता तो विद्वानों ने सिद्ध भी कर दी है। द्वारकादास पारीख और प्रभु दयाल मीतल ने अपने 'सूर निर्णय' में सूर की केवल इन

Scanned with CamScanner